"प्रश्न-पत्र पर रोल नम्बर के अतिरिक्त कुछ भी न लिखें, अन्यथा इसे अनुचित साधनों में लिप्त माना जायेगा और नियमानुसार कार्यवाही की जायेगी।"

Roll No. ....

B.A. - (S.-III) **Hindi**

5107 NEP

Bachelor of Arts (Semester-III) Examination, 2025

(हिन्दी)

CORE COURSE I - HIN6001T

आधुनिक हिन्दी कविता

समय : तीन घण्टे

पूर्णांक : 80

भाग-अ

नोट : (1) भाग-अ के सभी प्रश्न करने अनिवार्य हैं। प्रत्येक प्रश्न 2 अंक का है। (शब्द सीमा 50 शब्द प्रत्येक) 10×2 = 20 अंक

भाग-ब

(2) भाग-ब इकाई 1, 2, 3, 4 में से विकल्प सहित तीन व्याख्याएँ तथा इकाई-5 से विकल्प सहित एक टिप्पणीपरक प्रश्न (शब्द सीमा 275 शब्द प्रत्येक) 4×6 = 24 अंक

प्रत्येक इकाई से एक-एक आलोचनात्मक प्रश्न जिसमें से किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर देना होगा। (शब्द सीमा 550 शब्द)
$3\times12 = 36$ अंक

भाग-अ

निम्नलिखित सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिये : $10\times2 = 20$

1. भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने सब उन्नति का मूल किसे माना है?
2. 'प्रियप्रवास' के रचनाकार का नाम बताइये।
3. 'साकेत' में कुल कितने सर्ग हैं?
4. 'आँसू' कविता में किसका वर्णन है?
5. सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' किस युग के कवि हैं?
6. 'प्रिय पथ के यह शूल' किसकी रचना है?
7. अज्ञेय का पूरा नाम बताइये।
8. 'किरन धेनुएँ' कविता में किसका चित्रण किया गया है?
9. रस की परिभाषा लिखिये।
10. वीर रस को उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिये।

भाग-ब

प्रश्न संख्या 1, 2, 3 में से दिये गये पद्यांशों की सप्रसंग व्याख्या कीजिये तथा प्रश्न संख्या 4 में विकल्प सहित एक पर टिप्पणी लिखिये । $4\times6=24$

1. परिकर कटि कसि उठौ धनुष पै धरि सर साधौ
केसरिया बाना सजि कर रन-कंकन बाँधो
जासु राज सुख बस्यौ सदा भारत भय त्यागी
जासु बुद्धि नित प्रज्ञा-पुंज-रंजन महँ पागी

अथवा

ज्यों ज्यों जाते दिवस चित्त का क्लेश था वृद्धि पाता।
उत्कण्ठा भी अधिक बढ़ती व्यग्रता भी सताती
होतीं आके उदय उर में घोर उद्विग्नताएँ
देखे जाते सकल ब्रज के लोग उद्भ्रान्त से थे।

2. सिद्धि मार्ग की बाधा नारी! फिर उसकी क्या गति है?
पर उनसे पूछूँ क्या, जिनको मुझसे आज विरति है।
अर्द्ध विश्व में व्याप्त शुभाशुभ मेरी भी कुछ मति है।
मैं भी नहीं अनाथ जगत में मेरा भी प्रभु पति है।

अथवा

ले चल वहाँ भुलावा देकर
मेरे नाविक! धीरे-धीरे
जिस निर्जन में सागर लहरी
अम्बर के कानों में गहरी .....
निश्छल प्रेम-कथा कहती हो
तज कोलाहल की अवनी रे।

3. जागो फिर एक बार!
प्यारे जगाते हुए हारे सब तारे तुम्हें,
अरुण-पंख तरुण-किरण

खड़ी खोल रही द्वार
जागो फिर एक बार!

अथवा

अब मंदिर में इष्ट अकेला
इसे अजिर का शून्य गलाने को गलने दो?
चरणों से चिह्नित अलिंद की भूमि सुनहली
प्रणत शिरों के अंक लिये चंदन की दहली
झरे सुमन बिखरे अक्षत सित
धूप अर्घ्य नैवेद्य अपरिमित।

4. रस के स्वरूप को समझाइये।

अथवा

रस के भेदों को सोदाहरण समझाइये।

निम्न में से किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर दीजिये। (शब्द सीमा 550 शब्द)
$3 \times 12 = 36$ अंक

5. 'भारत वीरत्व' कविता के माध्यम से कवि क्या संदेश देना चाहता है?

6. 'यशोधरा' का काव्य-सौन्दर्य स्पष्ट कीजिये।

7. 'जूही की कली' कविता के आधार पर निराला के प्रकृति-चित्रण की विवेचना कीजिये।

8. अज्ञेय 'साँप के प्रति' कविता के माध्यम से क्या संदेश देना चाहते हैं?

9. रस के अवयवों पर प्रकाश डालिये।

--x--

JNVU PYQs

www.kashibishnoi.com

PYQ | Syllabus

Arts | Science

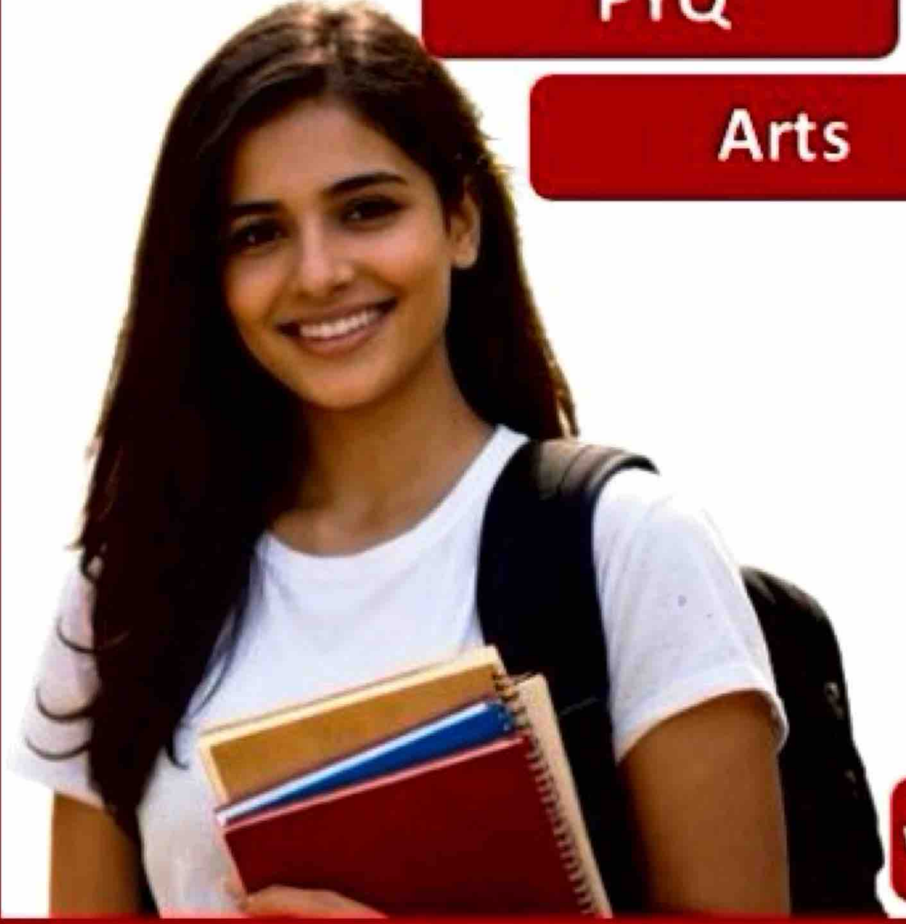

JNVU
&
Other Universities

For Free PDF Notes

www.kashibishnoi.com

english_by_kashi_bishnoi_ap
englishbykashibishnoi
Learn English with Kashi Bishnoi

YouTube

Asst. Prof. Kashi Bishnoi